प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी द्वारा
दिनांक 15.8.1987 को स्वतंत्रता दिवस की
40वीं वर्षगांठ पर लाल किले पर दिया गया भाषण

भारतवासियो, दोस्तो..आजादी की हर वर्षगांठ देश के लिए पावन होती है । हर वर्षगांठ पर हम हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का सोचते हैं । ऐसे दिन पर हमारा ध्यान आधुनिक भारत के निर्माताओं पे जाता है । आज यहां लाल किले से इसकी पावन माटी पर खड़े होकर हमारा ध्यान 1857 पे जाता है । जब हमारे पहले स्वतंत्रता सेनानी इसी लाल किले पर लाये थे । हमारा ध्यान 1945 पर जाता है जब आजाद हिन्द फौज के जवान यहां पर पेश करे जा रहे थे । उनका अपराध यही था कि वो अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए लड़ रहे थे । 1947 में पंडित जी ने यहीं कहां पर आजाद भारत का झण्डा चढ़ाया था । आज जब हम यहां जमा हैं तो हमारा ध्यान उन्हीं आदर्शों पर, उन्हीं सिद्धान्तों पर, उन्हीं मूल्यों पर और उन्हीं सपनों पर जाता है जिनसे हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को शक्ति मिलीथी जिससे भारत ने अपनी आजादी जीती थी । और आज यहां जमा होकर हम पुनः समर्पित करते हैं । जवाहरलाल नेहरू ने कहा था अगर हम जीवन की बड़ी उपलब्धियों को पाना चाहते हैं यदि हम भारत को एक महान राष्ट्र बनाने का सपना देखते हैं तो हमें भी महान बनना पड़ेगा जिससे हम भारत मां की योग्य सन्तान कहला सकें । इस 40वीं वर्षगांठ पर हमारा खास ध्यान जाता है खाली पिछले एक साल के कार्यों पर नहीं बल्कि पूरे 40 साल पर । साथ में हम आगे भी देखते हैं भविष्य की तरफ। हमारे पूर्वजों ने हमें दिखाया उन्होंने हमें आजादी लेकर दिखाया लेकिन उन्होंने इस आजादी को बचाना कायम रखना+ हमारी जिम्मेवारी बनाई । इसकी रक्षा हमारे कंधों पर आई । इन चार दशकों में हमने बहुत मुकाबले करे । हमपर धमकी आई, दबाव आया, साजिश का मुकाबला किया, आक्रमण का सामना किया । हम झुके नहीं, मुड़े नहीं । हमने भारत की एकता और अखण्डता -- अपनी बहादुरी से, अपने खून से हमारी कुरबानी से हमने बचाई और बनाई । हमने दुनियां को दिखाया कि भारत मजबूत है, भारत एक है और भारत दब नहीं सकता है । हमने दुनियां को

..2

दिखाया कि कोई हमें दोबारा गुलाम नहीं बना सकता है । हमने दिखाया कि भारत की एकता को कोई भी कमजोर नहीं कर सकता है । और हमारे देश की रक्षा के लिए, आजादी के लिए, एकता के लिए - हमने दिखाया कि कोई भी भार ज्यादा भारी नहीं है । कोई भी मेहनत ज्यादा नहीं है, कोई भी त्याग बड़ा नहीं है । हमारी सीमाओं पर, हमारे जवानों ने, हमारे अफसरों ने अपने जवानी के जीवन पूरी दी हमारी रक्षा के लिए । हम बदले में उनकी देखभाल करते हैं । हम बदले में उन्हें बढ़िया से बढ़िया हथियार देते हैं, गोला-बारूद देते हैं, हम देखते हैं कि उन्हें साज सम्मान मिले, यह हमारा संकल्प है । भारत की आजादी के मायने भारत के लोगों की आजादी है । भारत की आजादी के मायने कि हम प्रजातंत्र की जड़ को मजबूत करें । हम देश में निष्पक्ष चुनाव कर पायें जिसमें भारत का हर नागरिक भाग ले पाये । हम मुक्त संसद चलायें जिसमें भारत के लोगों की आवाज सुनाई दे जो हमारे देश का भविष्य देख, बनाये । आजाद भारत के मायने कि निष्पक्ष न्यायपालिका हों और कानून का शासन हो । आजाद भारत के मायने एक मुक्त और आजाद प्रेस हो । लेकिन लोकतंत्र बचाना इतना आसान नहीं । खासकर जब हम देखते हैं कि कई ऐसे लोग हैं जो गैर जिम्मेदारी से अनुशासनहीनता से स्वाधीनता को खतरा लाते हैं जो अपने बरताव से संविधान और उसकी संस्थाओं को अनादर पहुंचाते हैं । तब भी हमने दिखाया है कि हमारे देश में प्रजातंत्र की जड़ बहुत गहरी जमी है । हमारी जनता को चौकन्नी रहना है । हमें देखना है कि लोकतंत्र ही एक ऐसी सरकार है जो भारत जैसे देश में चल सकती है । हमारी महान आर्थिक उपलब्धियां दुनियां भर में मानी गयी हैं । गांधी जी ने हमें सिखाया था कि विकास का काम देश बनाने का काम गरीबों से, गरीबी हटाने से शुरू होगा । उन्होंने हमें सिखाया था कि हमारे जो नैतिक कर्तव्य हैं राष्ट्र जीवन के उनको हमें आगे रखना है । इन्हीं लक्ष्यों पर हमने देश को आगे बढ़ाया है । इन्हीं लक्ष्यों पर हमने गरीबी हटाने ~~को/न/~~ में बिल्कुल ऊपर रखा है । और अपनी पूरी ताकत लगायी है गरीबी हटाने में । इन्दिरा जी ने गरीबी हटाने की एक पुकार उठायी । एक नयी भावना वो लायीं देश में जिससे पहली बार देश में गरीबी कम होने लगी । उनके 20 सूत्री कार्यक्रम के नीचे और दूसरे ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के नीचे चाहे एन०आर०ई०पी० था, आई० आर०डी०पी० था चाहे दूसरे थे - इन कार्यक्रमों से भारत के

गरीब ऊपर उठने लगे । और हमने देखा कि इस 40 साल में हमने तस्वीर बदल डाली । 40 साल हुए दो तिहाई भारत की जनता गरीबी रेखा के नीचे । आज दो तिहाई जनता गरीबी रेखा के ऊपर उठ पाई है । इन कार्यक्रमों के द्वारा करोड़ों लोग गरीबी रेखा के ऊपर उठे । इन कार्यक्रमों के द्वारा हमने समन्तवाद तोड़ा । गरीबी हटाने के लिए हम योजनायें लाये गरीबी हटाने के लिए हमने हरियाली का जो रेव्यूल्यूशन था वो देश में फैलाना शुरू किया । उसी कुछ ही वर्ष सालों में हमारे अनाज का उत्पादन तीन गुणा बढ़ गया । मुझे याद है 21 साल हुए जब सूखा पड़ा था और इन्दिरा जी को बाहर से अनाज मंगाना पड़ा था तो कितनी शर्मिन्दा हुई थी जब उन्हें सिर झुकाकर अनाज मांगना पड़ा । उन्होंने सबसभी उसी कमरे में कहा कि वे दूसरा दिन ऐसा नहीं होने देंगी जब भारत को झुककर अनाज के लिए विदेश जाना पड़े । उन्होंने टैक्नोक्रैट्स को दूसरे जो सलाह दे रहे थे उनको ओवररूल किया और ऐसे कदम उठाये जिससे उत्तर-पश्चिमी भारत में एकदम हरियाली फैल गयी । इन्दिराजी की दृष्टि , इन्दिराजी के विचार, उनके संकल्प से और भारत के किसानों की पसीने और काम से यह फैल पाया है और आज हम गौरव से कह सकते हैं कि भारत भूखा हरेकर किसी के सामने नहीं झुकेगा।इसी तरह से आजादी के समय पर हम हमारे उद्योग कुछ ही चीजें बनाते थे । आज 40 के विकास बाद हमारे उपोग ऐसे आगे बढ़ गए हैं कि भारत दुनियां के डिवेलप देशों के बराबर चीजें बना सकता है । हम आज ऐसे जगह पहुंच गए है जहां से हम तेजी से आगे कूद के लपक कर पहुंच सकते हैं । दूसरों का मुकाबला कर सकते हैं । हमारे वैज्ञानिकों ने दुनियां को दिखाया है कि वो ऊंचे से ऊंचे विज्ञान कर सकते हैं । हमारे टैक्नोक्रैट्स ने दिखाया है कि वो हर तरह की टैक्नोलोजी को लेकर इस्तेमाल कर सकते हैं । और उसमें कामयाब हो सकते हैं । अभी रास्ता लम्बा है लेकिन कोई यह नहीं कह सकता है कि हम इस 40 साल में दूर नहीं आये हैं । जो नयू नींव हमारे विकास के इस 40 साल में लगाई गयी उसपर हम आज हमारा भविष्य बनाने जा रहे हैं । हम देखेंगे कि हमारे उपोग तेजी से बढ़ें और ज्यादा फैलें । हम देखेंगे कि जवानों के लिए, रोजगारी के लिए नये मौके मिले और ज्यादा मौके मिले । हमें देखना है साथ में कि उत्पादिका बढ़े कीमतें घटें और क्वालिटी हम बढ़ा पायें । हमारी कोशिश होनी है

..4

कि हम मजदूरों को हमारे पब्लिक सैक्टर यूनिट्स के मैनेजमेंट को ला पायें। हमें देखना है कि हमारी साइंस और टैक्नोलोजी खाली विदेश से लेकर नहीं बल्कि ऐसे रास्तों पर चले जिससे देशका फायदा हो, देश के गरीबों का फायदा हो जो हमारी मांगे हैं, जरूरते हैं उनपर उनका ध्यान जाये साथ में हमें देखना है कि वो आगे बढ़कर दुनियां में जो काम हो रहा है उसका मुकाबला करें, आगे बढ़ें दुनियां को रास्ता दिखाये। लेकिन सबसे जरूरी है कि हम हमारा ध्यान भटकने न दे, हमारा ध्यान हर वक्त गरीब से गरीब, कमजोर से कमजोर पर होना है।

कृषि में इन 40 साल में देश के किसानों की पैदावार बहुत बढ़ गयी है। 15 करोड़ टन तक पहुंच चुकी है लेकिन हम देख रहे हैं कि पिछले तीन साल से 15 करोड़ टन पर-के आसपास रुकी हुई है। यह जरूर है कि इन सालों में ठीक से बारिश नहीं पड़ी। किसानों को कई सौ देशों में भारत के कई हिस्सों में कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन तब भी हमें हमारे किसानों की पैदावार ऐसी पक्की करनी है कि मौसम से उसको फर्क न पड़े। हमें ऐसी बनानी है कि चाहे बारिश हो चाहे न हो हमारे किसानों की पैदावाद बढ़ती जाये, उत्पादन बढ़ता जाये। करीब 70% हमारी आबादी देहात में रहती है और उन 70% में से करीब उतने ही लोग हमारे गरीब से गरीब हैं और वो भारत के खेतों में अपनी रोजगारी पाते हैं। कई किसान हैं उनसे बहुत ज्यादा खेत मजदूर हैं। हमें उनका खास ध्यान देना है। अगर गरीबी हटानी है खत्म करनी है तो हमारा ध्यान देहात में किसान के खेतों में जाना है। हमने ग्रीन रेव्यूल्यूशन को लेकर फैलाना शुरू किया है और हमें बहुत खुशी हुई कि अब पिछले दो साल में हम देख रहे हैं कि पहली बार उत्तरप्रदेश में, बिहार में, उड़ीसा में और बंगाल में फर्क पड़ रहा है, किसानों की पैदावार बढ़ रही है, देहात में गरीबी कम होने लग रही है। साथ में हम देख रहे हैं कि कपास की पैदावार, तेलबीज की पैदावार और दाल की पैदावार पर खास ध्यान देने की जरूरत है। इस तरह से जैसे हरियाली फैलेगी किसान के खेतों में, वैसे ही हम देखेंगे कि गरीबी भी हटती जायेगी, मिटती जायेगी। इस साल हमने सबसे ज्यादा साधन दिया है गरीबी हटाने के कार्यक्रमों में। इतना कभी पहले नहीं दिया गया था। साथ में हमने प्रशासन को भी मजबूत करना एक गरीबी हटाने का कार्यक्रम बना दिया है। मैंने खुद दौरे करके देखकर काम देखकर अफसरों से मिलकर इन कार्यक्रमों को और मजबूत किया है और तेज किया है और सबसे जरूरी हमने शिक्षा को भी एक गरीबी हटाने का

कार्यक्रम मानता है क्योंकि जब तक गरीबों के बच्चों को बढ़िया शिक्षा नहीं मिलेगी तब तक गरीबी हट नहीं सकती है । लेकिन आज एक और समस्या हमारे सामने है, एक बहुत गम्भीर समस्या है । वो युवकों के रोजगारी की है । हम देख रहे हैं कि युवकों में एक निराशा कभी-2 दिखलाई देती है, करोड़ों युवक काम ढूंढ नहीं पाते हैं । रोजगारी नहीं पाते हैं और करोड़ों रोजगारी पाते हैं लेकिन असंतुष्ट होते हैं क्योंकि जिस तरह की वो चाहते थे उस तरह की उन्हें नहीं मिली । हमें पूरे ढांचे पर ध्यान देना है । हमारे ढांचे में कुछ कमजोरियां,कुछ कमियां हैं । रोजगारी है, नौकरियां हैं लेकिन उन नौकरियों को भरने के लिए जो शिक्षा जो स्किल्स होनी चाहियें वो हमारे लोगों में नहीं हैं । लाखों लड़के-लड़कियां मैट्रीकुलेट हैं, लाखों डिग्री लिए हुए हैं । लेकिन उन्हें सफेद कॉलर की नौकरी नहीं मिल पाती है । इन बातों को हमने नई शिक्षा नीति में देखा है । हमारी कोशिश है कि ढांचे में जो कमजोरियां हैं इनको हम ठीक करें । हम देखेंगे इस नीति से यह जो लड़कियां और लड़के स्कूल से निकल रहे है जो कॉलेज से निकल रहे हैं उन्हें उस तरह की शिक्षा मिले जिससे उन्हें रोजगारी भी मिले, जिससे उन्हें नौकरी मिले । हमें देखना होगा कि साथ में यह हमारे जो देहात में काम देने के कार्यक्रम हैं, जो हमारे दूसरे विकास के कार्यक्रम हैं उन्हें इस तरह से चलायें जिससे हम ज्यादा काम दे पायें लेकिन —लेकिन हम तभी यह सब कर पायेंगे जब हर क्षेत्र में हम तेजी से विकास कर पायेंगे। कृषि में, उद्योग में, इन्फ्रास्ट्रक्चर में और सर्विसिस में और सब शायद सबसे जरूरी हमें देखना है कि सैल्फ इम्पलायमेंट में हम कामयाबी पायें । सबके लिए काम देना इतना असम्भव नहीं । अगर हम दृढ़ता से काम करें अगर हम ठीक से जांच करें अगर हम देखें कि जिन स्किल्स की जरूरत है उसी तरह हम शिक्षा दें । अगर हम विकास और तेजी से कर पायें, अगर हम ज्यादा युवकों को टैक्नीकल रास्ते पर लगा पायें । अगर हम छोटे-छोटे उद्योग ज्यादा शुरू करा पायें, अगर हम ज्यादा लोगों को सर्विसिस में डाल पायें तब यह हो सकता है। खास हमें देखना है कि सब का ध्यान खाली सरकारी नौकरियों पर नहीं जाये बल्कि दूसरी जगहों पर भी जाये । ऐसे बेकारी हट सकती है । हम बेकारी हटायेंगे । हम देश के सामने ऐसे कार्यक्रम लायेंगे कि आते हुए सालों में बेकारी खतम हो जायेगी। देश में लेकिन इस साल एक गम्भीर परिस्थिति हमारे सामने आई वो सूखे की ।

इस वर्ष जैसा सूखा पड़ा है देश के कोने-कोने तक फैला हुआ--वैसा सूखा बहुत सालों से नहीं पड़ा । 65-66 में भी सूखा पड़ा था बहुत भयंकर था लेकिन वो आती एक दो प्रदेशों में था । इस साल देश के करीब-करीब करीब हर कोने तक सूखा पहुंचा हुआ है लेकिन क्योंकि इन्दिरा जी ने अपनी दूरदर्शिता से हमारे किसानों की अनाज की पैदावार बढ़ा दी थी । आज हमारी आर्थिक व्यवस्था मजबूत है । और हम इसका पूरा मुकाबला कर सकते हैं कोई कमी नहीं होगी । सूखा है लेकिन क्योंकि इन्दिराजी ने हरितक्रान्ति शुरू करा दी थी तो हम आज इसका सामना कर सकते हैं । कई प्रदेशों में तीसरे-चौथे साल का सूखा पड़ रहा है । गरीब की बहुत बुरी हालत है । गरीबों को सबसे ज्यादा कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है । और इनकी जरूरतें आज हमारे ध्यान में सबसे ऊपर हैं । हमारा ध्यान भूमिहीनों पर जाता है और छोटे किसानों पर जाता है जो बेरोजगार हो गए हैं जिनको कुछ करने को मिल नहीं रहा है । कई प्रदेशों में पीने के पानी की बहुत कमी है । गांव में और शहरों में बहुत प्रदेशों में चारे की बहुत कमी है. पशुओं के लिए जानवरों के लिए। हम इस सूखे के लिए पूरा जोर लगायेंगे और हमारे सामने रखेंगे । सरकार के प्रमुख के नाते मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि हम सूखे से निपटने के लिए पूरा ध्यान (तालियां) और प्राथमिकता दूंगा । हम देखेंगे कि जो हमारे अनाज के भण्डार हैं उससे हम अनाज कोने-कोने तक देहात में पहुंचायें । हम देखेंगे कि राहत के काम दूसरे तरह के रोजगारी दी जाये जिसमें गरीबों को पूरी सुविधायें मिलें । हमें देखना है कि जिनको रोजगारी की जरूरत है उन्हें रोजगारी मिले । हम देखेंगे कि खाने की कमी नहींहोगी । किसी को भूखा नहीं जाना पड़ेगा । हम पी०डी०एस० को मजबूत करेंगे । जिसमें देश के कोने - कोने तक खासकर देहात में हम हर घर तक पहुंच पायें लोगों को दूर नहीं चलना पड़े । हम देखेंगे कि पीने के पानी की कोई कमी न होऔर हम पहुंचा पायें । खासकर पशुओं के चारे पर ध्यान देना है जिसमें पशुओं को भी संकट का सामना--पशु भी संकट का सामना कर पायें ।सूखे के सुलझने के लिए. सूखे से जूझने के लिए हमें एक विशाल सामूहिक प्रयास करना है । केन्द्र से और प्रदेशों के बीच । हम देखेंगे कि हमारी तरफ से जितनी भी सहायता हो सके वो मिले । लेकिन साथ में हमें देखना है कि प्रदेश सरकारें. राज्य सरकारें भी तेजी से मजबूती से काम करें । क्योंकि उनकी पहुंच गांव-गांव तक है देहात तक है । हम सहायता देंगे । मदद करेंगे ।

लेकिन तेजी से काम राज्य सरकारों को करना होगा । इसीलिए मैंने मुख्यमंत्रियों को चिट्ठियां लिख दी हैं खासकर उनको जिनके प्रदेशों में सूखा पड़ा है । मैं मुख्यमंत्रियों की एक बैठक बुलाऊंगा जिसमें हम तय करें कि कैसे सब मिलकर इस सूखे का मुकाबला कर सकते हैं । कैसे और कौन-कौन से कदम उठाये जायें जिसमें गरीबों को कठिनाई का सामना न करना पड़े । बहुत काम सामने हैं लेकिन देश मजबूत- हम यह कर सकते हैं और इस चुनौती का मुकाबला कर सकते हैं लेकिन जरूरत है कि हम हमारा पूरा ध्यान और पूरी शक्ति इसपर लगा डाले । हमारे अनाज के भण्डार भरे हैं । हममें अनुभव और योग्यता है । आज हम बिना विदेशी मदद के सुखमरी की चुनौती का मुकाबला कर सकते हैं । लेकिन जरूरी है कि हम समझें कि कैसे सूखे के संकट से जूझने के लिए विकास रोकना एक जवाब नहीं है । विकास रोकने से, विकास के काम रोकने से आगे और भी संकट का सामना करना पड़ेगा । हमें देखना है किस तरह से बगैर विकास को कम करे या धीमे करे हम साधन ढूंढे जिससे हम इस चुनौती का मुकाबला कर पायें ।=इम कर सकें । जरूरत है किफायत की और सादगी की । जरूरत है कि हम गैरजरूरी खर्च कम कर दें रोकें । हमने हर मंत्रालय को कह दिया है कि वो ऐसे कदम लेना शुरू कर दें । इसी तरह से प्रदेशों में भी ऐसे ही कदम उठाने हैं । सरकार जो कर सकती है वो करेगी लेकिन ऐसे सूखे का मुकाबला अकेले सरकार नहीं कर सकती है जरूरत है ऐसे चुनौती के मुकाबले के लिए कि जनता सरकार के साथ मिलकर मुकाबला करे । खासकर युवक आगे आयें । सरकार के साथ, दूसरों के साथ मिलकर इस चुनौती का मुकाबला करें । हमें देखना है/कि इस गम्भीरता का सामना करने के लिए सरकार के साथ हर आदमी, हर औरत व्यक्ति के नाते हर समूह अपने नाते समाज के नाते हम इसका मुकाबला करें और हम गांव से बस्ती से लेकर एक आन्दोलन ऐसा उठायें कि देश के कोने-कोने तक पहुंचे । यह समय है जब खुशनसीब लोगों को, कमभाग्यवान लोगों की मदद करनी चाहिये । ऐसे समय पर हमें देखना है कि कोई समाजविरोधी तत्व पैसे बनाने की कोशिश न करे दूसरे की मुश्किलों का फायदा उठाने की कोशिश न करें । इनका मुकाबला करना होगा । जमाखोरी खतम करनी होगी । मुनाफाखोरी खतम करनी होगी । अगर हम ।तालियां। इन समाजविरोधी तत्वों का पूरा मुकाबला करेंगें । हम सब चीज को काबू रख पायेंगें । हमारी तरफ से कोई कमी नहीं होगी । हम/सब पूरे जोर से सरकार की ताकत से हम देखेंगें यह समाजविरोधी तत्व दबे रहें काबू रहें और अगर कोई कमी होगी कानून में तो हम उसे मजबूत करने के

लिए तैयार हों । अगर और अधिकार की जरूरत होगी तो हम और अधिकार लेने के लिए तैयार होंगे । लेकिन आज मैं अपील करता हूँ कि सब इस कार्य में सहयोग दें । साधन जुटाने के लिए एक राष्ट्र चुनौती का मुकाबला करने के लिए । हम चाहते हैं कि हर वर्ग से. विधायकों से. सांसदों से विपक्ष दलों से विशेज्ञों से.प्रेस से हमें रचनात्मक सहयोग मिले । हमारा काम इस चुनौती में ऐसा है कि हमें इसका सामना करने के लिए हमें एक राष्ट्र सहयोग की प्रतिक्रिया बनानी है ।

इस 40 साल में भारत ने उल्लेखनीय समाजिक प्रगति करी है । हमने इन सालों में देखा कि जातिवाद बहुत कम हो गया है । इन सालों में हमने महिलाओं की शक्ति बनाई है । हम ने लड़कियों को और मौका दिया है स्कूल जाने का. कालेज जाने का । हमने उन्हें मदद करी है । हमने उन्हें,प्रोत्साहन दिया है । आज प्रोत्साहन दिया है जिसमें स्कूल में रहें । पिछले साल हमने महिलाओं के हाथ मजबूत करने के लिएदहेज विरोधी कानून को बहुत कम मजबूत किया है । और हमने देखा है कि जब से वो कानून मजबूत हुआदहेज की वजह से जो लड़कियां मारी जाती थी वो एकदम कम हो गया है ।हत्या कम हो गयी है । हमारी उम्मीद है कि इसी तरह से हम महिलाओं की ताकत और बहुत ज्यादा बढ़ा पायेंगे । हमें हमारा ध्यान मजदूरों की तरफ. मजदूरों की समस्याओं पर ले जाना है । इन दो साल में हमने बाल मजदूरी कम करने के लिए एक नया कानून बनाया है । ऐसा कानून जिसमें खतरनाक उद्योगों में बच्चे काम न कर पायें । ऐसा जो बच्चों को शिक्षा भी दिलवायेगा उनके भोजन और उनकी सेहत पर भी ध्यान रखे । खेत मजदूरों के लिए उनकी समस्याओं पर ध्यान 40 साल से नहीं दिया गया । हमने एक नेशनल कमीशन बैठाया है जो देखेगा खेत मजदूरों की समस्याओं को और उन्हें हल करने के लिए कार्यक्रम हमारे सामने रखेगा । आदिवासियों की खास समस्याएं हैं और उनके जिलों में उनके गाँव में झोपड़ियों में मैं खुद गया हूं उनकी कठिनाई देखने के लिए और देखने के लिए कि कैसे सरकार के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं । कहां मजबूत करने की जरूरत है. कहां और मदद की जरूरत है । हमने खास ध्यान दिया है हमारे हरिजन भाईयों का । हम जा रहे हैं देखने के लिए कि हम ऐस एक०टी०. एस०सी० कमिश्नर जो हैं उनके हाथ ऐसे मजबूत करें जिसमें वो सख्ती से कार्यवाही कर पाये जहां भी वो देखे कि हरिजनों को आदिवासियों को अपना हक नहीं मिला है । हम देखेंगे कि जो कानून बने हैं हरिजन आदिवासियों को ऊपर उठाने के लिए.मजबूत करने के लिए

वो पूरी तरह से चले और कोई उनके चारों तरफ घूमकर काम रोक न पायें । हमने इन्दिराजी का जो 15 प्वायंट का डायरेक्टिव था अल्पसंख्यकों के लिए उसको और मजबूती से लागू किया है । देश में मध्यम वर्ग बहुत बढ़ गया है क्योंकि आर्थिक अवसर बहुत मिले हैं उन्हें । बड़ने से लोग देश के कोने-कोने से दूसरे कोने में जाते हैं काम ढूंढने के लिए । आज भारत में ज्यादा लोग यात्रा कर रहे हैं । देश के एक तरफ से जा के दूसरी तरफ पर काम की खोज कर रहे हैं । घर से निकलकर, गांव से निकलकर, अपने जिले को छोड़ कर, कभी-कभी प्रदेश को छोड़कर वो काम पा रहे हैं । इससे देश की एकता बढ़ती है । ऐसे लोग निकलकर देशका विस्तृत आकाश देखते हैं । ऐसे लोगों से देशकी एकता और अखण्डता बढ़ती है । बहुत सफलताएं हम पाये हैं इस 40 साल में लेकिन तब भी इस सफलताओं के बावजूद भी, सामाजिक सुधार के बावजूद भी बहुत काम करने को हैं । कहीं पुरानी समस्याएं हैं और कोई कोई नई समस्याएं हमारे सामने आईं । साम्प्रदायिक भावनायें कहीं कहीं बढ़ गई हैं । हम देख रहे हैं कि धर्म स्थानों का दुरुपयोग हो रहा है । धार्मिक भावनाओं का खिलवाड़ हो रहा है । हम देख रहे हैं कि साम्प्रदायिक साम्प्रदाय से लड़ रहे हैं । भाई भाई से लड़ रहा है । मनुष्य मनुष्य से लड़ रहा है । हमारे धर्मनिरपेक्षता को इससे खतरा हो रहा है । साम्प्रदायिकता से फिरकाप्रस्त शक्तियों से हमारे देश की एकता और अखण्डता को चोट लग रही है । आजादी की लड़ाई में हमने असाम्प्रदायिकता पर, असाम्प्रदायिकता की भावनाओं पर सिद्धान्तों पर लड़ाई लड़ी थी । आज साम्प्रदायिकता के लिए कोई जगह भारत में नहीं है । भारत एक प्राचीन देश है जिसमें विभिन्न विश्वास के लोग रहते हैं सदियों से, हजारों सालों से रहते हुए आये हैं । हर धर्म के, हर विचार के, और हमने देखा है कि हमारे समाज में हर परम्परा के, हमारे समाज में हर आस्था के लोग मिलकर-जुलकर भाई बन्धी से रहें लेकिन हमारे समाज में, हमारे प्रजातंत्र में साम्प्रदायिकता के लिए कोई जगह नहीं है । अगर हमें धर्मनिरपेक्षता की चुनौती का सामना करना है तो हर नागरिक का प्रथम कर्तव्य है कि वो सोचविचार कर अपने कर्म से, अपने हर काम में सदभाव रखे । हमें देखना है कि भारत के अधिकतर लोग जो बहुत गहरी तरह से धर्म में मानते हैं, धार्मिक हैं, बहुत गहरी तरह से सेक्युलर हैं वो अपनी ताकत आगे लायें । और जो कुछ चन्द लोग हैं, जो भारत कोकमजोर करते हैं, जो कुछ चन्द फिरकाप्रस्ती को मानते हैं, कट्टरता में मानते हैं, जो हिंसा से चलते हैं, जो लूट और आंतक से चलते हैं उनका मुकाबला करा जाये

भारत में कोई जगह नहीं है उनके लिए जो धर्म के नाम पर देशको कमजोर करते हैं । सदियों से भारत में विभिन्न सम्प्रदाय रहीं हैं । शान्ति में एक साथ काम करते हुए, एक साथ खेलते हुए, एक साथ खान-पान करते हुए । तब भी कभी-कभी एकदम से नफरत बढ़ जाती है, आपसदारी बढ़ जाती है, आतंक लग जाता है । आमतौर से यह बाहर वालों से होता है । कभी-कभी धार्मिक अधिकारियों के द्वारा होता है । यह वे लोग अफवाह से गलतफहमियों से झूठ फैलाने से हममें कमजोरियाँ डालते हैं । आमतौर से इस साजिश का शिकार निर्दोष लोग ही होते हैं । जब भी ऐसे फिरकापरस्त झगड़े बढ़ते हैं, उठते हैं तो निर्दोष को सबसे ज्यादा नुकसान होता है, सबसे ज्यादा चोट आती है । हमारी लड़ाई फिरकापरस्त शक्तियों के खिलाफ खाली कानून की मशीनरी से नहीं लड़ी जा सकती है यह लड़ाई एक जनता की लड़ाई बननी है । हर बस्ती से, हर मोहल्ले से यह लड़ाई लड़ी जानी है । हमें देखना है कि सब एक हो जायें । इस लड़ाई में जिसमें हम खतरनाक अपराधियों को दबा पायें जिसमें हम धर्म दुरुपयोग को रोक पायें.. जिसमें हम नफरत फैलाने वालों को खतम कर पायें । जिसमें हम उन्हें मिटा पायें जो घृणा के बीज फैला रहे हैं हमारे बीच में । जिसमें हम उनका मुकाबला कर पायें जो हमारे समाज को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं । साम्प्रदायिकता से अलगपन पैदा होता है । साम्प्रदायिकता से उग्रवाद पैदा होता है और कोशिश हो रही है कि साम्प्रदायिकता से, अलगपन से, उग्रवाद से हमारा लोकतंत्र खतम करा जाये । हम देख रहे हैं कि कैसिस तरकीबें लगाई जा रही हैं देशको कमजोर करने के लिए, देश में शान्ति खतम करने के लिए । कोशिश हो रही है कि हमारी ~~सहिष्णु~~ सहिष्णु,सहनशील और शान्तिप्रिय देशमें एक ऐसी भावना बनाई जायें जिससे हमारे जीवन का तरीका बदला जाये । हमें ऐसी धमकियों से दबना नहीं है । इनका मुकाबला करना है । जो भी धमकी से, दबाव से झगड़े बढ़ाकर हमारी आजादी, हमारी सुरक्षा और हमारे भविष्य को कमजोर करने की कोशिश करता है उसका हम पूरी ताकत से मुकाबला करेंगें । उसे हमारे धरती पर खड़े नहीं होने देंगें । हम रुकेंगें नहीं।तालियां। जब तक उग्रवाद बिल्कुल खतम हो जाये, अथवा वो उग्रवादी अपने हथियार फेंककर देशकी मुख्य धारा में वापिस आ जायें । लेकिन हिम्मत नहीं छोड़नी, डरना नहीं । गांधीजी ने कहा था "स्वराज्य का अर्थ मौत की परवाह नहीं करना है, जो राष्ट्र मौत से डरता है वो स्वराज्य हासिल नहीं कर सकता है और यदि स्वराज्य

हासिल कर भी ले तो वो उसे कायम नहीं रख सकता है"। आज गांधीजी के शब्द हमारे कानों में गूंजने चाहियें और हमें पूरे हौसले से इस चुनौती का मुकाबला करना चाहिये । जरूरी है कि हम याद रखें कि बदला ले के से हम मुकाबला नहीं कर सकते हैं । अगर हम बदला लेंगें तो हम वही करेंगें जो उग्रवादी हमसे करवाना चाह रहे हैं । बदला उग्रवाद की जीत होगा अगर हम अपना हाथ रोकेंगें तो उग्रवाद कमजोर होगा, हारेगा । उग्रवाद के इस फंदे में हमें नहीं फसना चाहिये । गांधी जी ने कहा था कि"हिंसा का जवाब अहिंसा से नहीं हो सकता है । हिंसा का जवाब आती अहिंसा हो सकती है"। आज की दुनियां में भारत का सिर बहुत ऊंचा है । भारत की आवाज इज्जत से सुनी जाती है दुनियां में, क्यों - कैसे हुआ कि 40 साल हुए जो देश गुलाम था, गरीब था । लोग सोचते थे कि खड़ा नहीं हो सकता था, आजाद नहीं रह सकता था । कैसे हुआ कि वो देश आज इतनी जोरदार आवाज से बोलता है । यह हुआ क्योंकि हम गांधी जी के विचारधाराओं को लेकर सिद्धान्तों को लेकर, पंडित जी के असूलों पर, इन्दिराजी के रास्ते पर चले हैं । हमने सीखा है कि निडर होकर हम बोलें । हमने सीखा है कि दबाव के नीचे कभी दबेंगें नहीं , हमने सीखा है कि हम गुटनिरपेक्षता के रास्ते पर, हिम्मत से, साहस से चुनौती का मुकाबला करते हुए चलेंगें । हमने इस 40 साल में दुनियां में अ परमाणु शक्ति के हथियारों को खतम करने का एक आन्दोलन चलाया । आज बड़े-बड़े मजबूत देश भी इसी रास्ते पर आ रहे हैं जो भावना गांधी जी ने और पंडित जी ने उठाई थी हमारी आजादी के पहले । आज 40-50 साल बाद दुनियां में अच्छी तरह से हम चला पा रहे हैं । पागलपन है कि हम और हथियार बनाते जायें । जब आज के हथियारों से पूरी दुनियां 50 बार खतम हो सकती है । पागलपन है । जब आज दुनियां में डेढ़ दो करोड़ हर मिनट खर्च जाते हैं हथियार की दौड़ में । जब उसका एक छोटा सा भाग भी हम ले सकते तो हम कितनी गरीबी, कितनी बीमारी, कितनी बेकारी हटा सकते थे । आज इन्हीं बातों पर भारत का ध्यान जा रहा है । हमारा ध्यान दुनियां में मानव अधिकार पर और मानव गरिमा पर पड़ा है । दक्षिण अफ्रीका में जहां गांधी जी ने अपनी पहली सत्याग्रह करी थी वहां आज भी गुलामी है । वहां आज भी आजादी का झण्डा नहीं उठता है, शर्म की बात है । सौ साल हो गए हजारों सैंकड़ों स्वतंत्रता सैनानी ने अपनी कुरबानी दी, जान दी। जहां से हमारी आजादी

की रोशनी उठी । वहाँ आज भी गुलामी है । हमने दुनियाँ के गरीबों की बातें उठाई हैं । हमने दुनियाँ के दबे तपकों की आवाज उठाई है । हमने दिखाया है कि हमारी आवाज एक संतुलन की आवाज है । सहनशीलता की आवाज है । हमारी आवाज एक करुणा की आवाज है, सत्य की आवाज है, अहिंसा की आवाज है । पिछले महीने श्रीलंका में हमने एक इतिहासिक समझौता किया । ऐसा समझौता जिसमें दिखाया कि हमारी नीतियाँ ठीक थीं जिसने दिखाया कि हमारी विदेश नीति की जो ताकत है वो बहुत है । जिसने दिखाया कि भारत ठीक रास्ते पर चल रहा था । इन 40 साल के यह एक महत्वपूर्ण महान उपलब्धि है।जो चिट्ठियाँ हमने दस्तखत करीं और जो समझौता किया उसमें श्रीलंका में शान्ति आयी, श्रीलंका में सहयोग आया । हमारे पूरे रीजन में शान्ति और सहयोग मजबूत हुआ और जो ताकतें, जो लोग वहाँ आ रहे थे । जिससे हमारे पूरे रीजन की सुरक्षा को डर हो रहा था जिससे हो सकता था कि जो पावर ब्लाक की दौड़ है वो हमारे रीजन में भारत के बिल्कुल पड़ोस पहुंच आये और हमारे सुरक्षा को असर करे वो हमने रोका है । इस समझौते से गुटनिरपेक्षता मजबूत हुई । यह साबित हुआ है कि देश आपस में बैठ के समस्याओं को हल करे सकते हैं । बगैर बड़ी शक्ति के, बगैर दूसरों के, बगैर किसी तीसरे के अन्दर आये बीच में मिल के । हमने देखा है कि जब भी ऐसे बाहर से लोग आते हैं , हस्तक्षेप करते हैं तो समस्याएं और गम्भीर हो जाती हैं और और ज्यादा मुश्किल हो जाती हैं ठीक करने के लिए। आज भारत की 40वीं वर्षगांठ पर हमें उन आदर्शों को, उन सिद्धान्तों को और उन विचारधाराओं को--के प्रति दोबारा समर्पित करना है । हमारे सबसे बड़ी उपलब्धि हमारे बुजुर्गों की प्रणाली है । हमने देखा कि यह प्रणाली बढ़े । हमारी प्राचीन परम्पराओं को लेकर हमारी सभ्यता को लेकर जो हजारों साल से बगैर टूटे चलती आ रही है उनकी भावनाओं को लेकर हम आजादी में आजादी की लड़ाई में और नये भारत बनाने में लगायें । आज हमारा सबसे बड़ा, हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि हमारा लोकतंत्र है । जिसे हमें बचाना है, मजबूत करना है । हमें देखना है कि हम इसे मजबूत करें । कोई कमजोरी न आने दें । लेकिन तब भी हम देख रहे हैं कि कुछ ऐसे तत्व हैं जो इसे कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं, तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं । यह सिस्टम 40 साल से चलती आ रही है । और हमने देखा है कि इसके नीचे भारत मजबूत है, भारत एक रहा है, भारत आगे बढ़ सका

है भारत दुनियाँ का मुकाबला कर सका है । अगर कोई अपने छोटे राजनीतिक विकास के लिए भारत की जनता का विश्वास तोड़ने के लिए तैयार है.अगर कोई हमारे लोकतंत्र को हारने के लिए तैयार है. खाली अपने विकास के लिए. अपने फायदे के लिए तो हमें उसका मुकाबला करना है । हमें देखना है कि वो हमारे ऊपर न आ पायें । हमें देखना है कि वो देश के ध्यान को भटका न पायें । हमें देखना है कि वो न अन्दर से न बाहर से ऐसी साजिश कर पायें कि हमारा देश कमजोर हो । आज हमारे समाज में हमारी प्रणाली में जरूर कुछ ऐसी चीजें हैं जो ठीक नहीं हैं । और हम देखेंगें कि तेजी से और सख्ती से जो भी गलत काम कर रहा है उसे सजा मिले । (लेकिन आज हमारा ध्यान राष्ट्र निर्माण पर जाना चाहिये । अब वहाँ पर नहीं । हमारा ध्यान देश बनाने में. देशको आगे बढ़ाने में जाना है । हमें देखना है कि हमारे प्रणाली में जो कमजोरियाँ हैं उन्हें हम दूर करें निष्ठा के साथ. लम्बे प्रयास के साथ. भावनायें बदल के । हम ऐसी नीतियाँ लायें जिससे हम हमारे समाज को हमारी प्रणाली को और भी मजबूत कर सकते हैं और यही काम हम कर रहे हैं । हम तरक्की का प्रयास कर रहे हैं । हम हर नेशन पर. युवकों पर खासकर युवकों से चाहेंगें कि वो एक राष्ट्र अभियान उठायें । आलस्य को खतम करने के लिए. निकम्मापन को खतम करने के लिए. कुम्भाप्रस्ती को खतम करने के लिए और भ्रष्टाचार को खतम करने के लिए । हमें हमारी सभ्यता के जो मुख्य मूल्य हैं जो गांधी जी ने निकालके हमारे सामने रखे थे उनपर चलना है । हमें देखना है कि हम आजादी को बचायें । हमें देखना है कि हम हमारे समाज को मजबूत करें । हमारी कोशिश है कि हम सामाज के सब वर्गों को ऐसे काम में लगायें करुणा के काम में. गरीब के कमजोर के कल्याण के काम में । शान्ति से. जातीय सद्भाव से धार्मिक सद्भाव से । हम देखें कि हमारे सामाज में हर तरह से हरिजन. आदिवासी और महिलायें आगे बढ़ पायें । मजबूती से आ पायें । (हमें आज ध्यान से गांधी जी के असूलों पर ~~महुंचना/है//~~ सोचना है । (सत्य.अहिंसाऔर मानवता की एकता । हमें साथ में आत्मनिर्भरता पर हमारा पूरा ध्यान डालना है । हमें याद रखना है कि खाली सही साधनों से खाली सही लक्ष्य प्राप्त हो सकते हैं । गांधी जी का संदेश था तो खाली उनकी पीढ़ी के लिए नहीं था लेकिन आती हुई हर पीढ़ी के लिए था । और जरूरी था हमारे आज देशकी आजादी के लिए । उतना ही जरूरी है हमारे देशको बनाने के लिए मजबूत करने के लिए । उतना ही जरूरी है आज की दुनियाँ को मजबूत करने के लिए । मैं आज मेरे 78 करोड़ बहन और भाईयों को जो इस सुन्दर देश के कोने-कोने में पहुंचे हुए हैं. रहते हैं उन्हें शुभकामनायें

देता हूं । यह हमारा भारत है आपका, मेरा, हमारे सब लोगों का, अमीरों का, गरीबों को, युवकों का, बुजुर्गों का, हर धर्म के लोगों का, हर जात के लोगों का, हर प्रान्त का, हर भाषा बोलने वाले का, हर तरह की संस्कृति का । हमारी एकता गहरी है, हमारी अखण्डता अमर है । हम विगत से प्रेरणा लेते हैं कि हम विश्वास से भविष्य में चलेंगे । हमारा दृढ़ संकल्प है कि हमारी आजादी, हमारा लोकतंत्र हमारी धर्मनिरपेक्षता, हमारी समाजवाद, हमारी सुरक्षा और हमारी गुटनिरपेक्षता । हम एक होकर मिलकर तरक्की के रास्ते पर । हम एक होकर मंजिलें चढ़ें । भारत को महान बनायें । धन्यवाद...

मेरे साथ जोर से बोलिए... जय हिन्द....जय हिन्द... जय हिन्द ।

धन्यवाद.... राष्ट्रीय गीत